

बजरंग बाण

दोहा

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, बिनय करैं सनमान।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान॥

चौपाई 1

जय हनुमंत संत हितकारी।
सुन लीजै प्रभु अरज हमारी॥

चौपाई 2

जन के काज विलंब न कीजै।
आतुर दौरि महा सुख दीजै॥

चौपाई 3

जैसे कूदि सिंधु महिपारा।
सुरसा बदन पैठि बिस्तारा॥

चौपाई 4

आगे जाय लंकिनी रोका।
मारेहु लात गई सुरलोका॥

चौपाई 5

जाय विभीषण को सुख दीन्हा।
सीता निरखि परमपद लीन्हा॥

चौपाई 6

बाग उजारि सिंधु महँ बोरा।
अति आतुर जमकातर तोरा॥

चौपाई 7

अक्षय कुमार मारि संहारा।
लूम लपेटि लंक को जारा॥

चौपाई 8

लाह समान लंक जरि गई।
जय जय धुनि सुरपुर में भई॥

चौपाई 9

अब विलंब केहि कारन स्वामी।
कृपा करहु उर अंतर्दामी॥

चौपाई 10

जय जय लक्ष्मण प्राण के दाता।
आतुर होय दुःख करहु निपाता॥

चौपाई 11

जय गिरिधर जय जय सुखसागर।
सुर समूह समरथ भटनागर॥

चौपाई 12

ॐ हनु हनु हनु हनुमंत हठीले।
बैरिहिं मारु बज्र की कीले॥

चौपाई 13

गदा बज्र लै बैरिहिं मारो।
महाराज प्रभु दास उबारो॥

चौपाई 14

ॐकार हुंकार महाप्रभु धावो।
बज्र गदा हनु विलंब न लावो॥

चौपाई 15

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमंत कपीशा।
ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर शीशा॥

चौपाई 16

सत्य होहु हरि शपथ पाय के।
रामदूत धरु मारु धाय के॥

चौपाई 17

जय जय जय हनुमंत अगाधा।
दुःख पावत जन केहि अपराधा॥

चौपाई 18

पूजा जप तप नेम अचारा।
नहिं जानत हौं दास तुम्हारा॥

चौपाई 19

वन उपवन मग गिरि गृह माहीं।
तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं॥

चौपाई 20

पाँय परौं कर जोरि मनावौं।
यहि अवसर अब केहि गोहरावौं॥

चौपाई 21

जय अंजनि कुमार बलवंता।
शंकर सुवन वीर हनुमंता॥

चौपाई 22

बदन कराल काल कुल घालक।
राम सहाय सदा प्रतिपालक॥

चौपाई 23

भूत प्रेत पिशाच निशाचर।
अग्नि बैताल काल मारी मर॥

चौपाई 24

इन्हें मारु तोहि शपथ राम की।
राखु नाथ मरजाद नाम की॥

चौपाई 25

जनकसुता हरि दास कहावो।
ताकी शपथ विलंब न लावो॥

चौपाई 26

जय जय जय धुनि होत अकाशा।
सुमिरत होत दुसह दुःख नाशा॥

चौपाई 27

चरण शरण कर जोरि मनावौं।
यहि अवसर अब केहि गोहरावौं॥

चौपाई 28

उठु उठु चलु तोहि राम दुहाई।
पाँय परौं कर जोरि मनाई॥

चौपाई 29

ॐ चं चं चं चं चं चपल चलंता।
ॐ हनु हनु हनु हनु हनुमंता॥

चौपाई 30

ॐ हं हं हाँक देत कपि चंचल।
ॐ सं सं सहमि पराने खल दल॥

चौपाई 31

अपने जन को तुरत उबारो।
सुमिरत होय आनंद हमारो॥

चौपाई 32

यह बजरंग बाण जेहि मारै।
ताहि कहो फिर कौन उबारै॥

चौपाई 33

पाठ करै बजरंग बाण की।
हनुमत रक्षा करै प्राण की॥

चौपाई 34

यह बजरंग बाण जो जापै।
ताते भूत प्रेत सब काँपै॥

चौपाई 35

धूप देय अरु जपै हमेशा।
ताके तन नहिं रहै कलेशा॥

समापन दोहा

प्रेम प्रतीतिहि कपि भजै, सदा धरै उर ध्यान।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करै हनुमान॥